

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ चार

भविष्यवाणी संबंधी व्यवस्था का अनावरण: अंतिम दिनों में अन्वेषण और कार्यकारी न्याय को समझना

Jeff Pippenger

2024-02-29

हम उस भविष्यसूचक नियम को स्थापित कर रहे हैं जिसकी पहचान यहूदा के गोत्र के सिंह ने दानियेल ग्यारह की अंतिम छह आयतों की मुहर खोलने के अपने कार्य में की थी, 'अंत के समय' 1989 में, जब रोनाल्ड रीगन और रोम के पोप के बीच हुए एक गुप्त गठबंधन के द्वारा सोवियत संघ बहा दिया गया था। हमने दिखाया है कि रोम के तिहरे अनुप्रयोग और बाबुल के पतन से प्रकाशितवाक्य सत्रह में उस स्त्री और उस पशु की पहचान होती है जिस पर वह सवारी करती है और जिस पर वह राज्य करती है।

अध्याय सत्रह और अठारह में स्त्री और पशु का जो चित्रण है, वह उस क्रमिक न्याय को प्रकट करता है जो परमेश्वर आधुनिक बाबुल पर लाता है; जिसका आरम्भ शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से होता है और जो तब तक चलता है जब तक मिकाएल खड़ा नहीं हो जाता और मनुष्यों के लिए अनुग्रहकाल समाप्त नहीं हो जाता। वह समयावधि परमेश्वर के कार्यकारी न्याय के प्रथम भाग को चिन्हित करती है, जो उसकी दया के मिश्रण के साथ सम्पन्न होता है। फिर सात अंतिम विपत्तियों के साथ, उसके न्यायों में कोई दया मिश्रित नहीं रहती। इन दो चरणों का संकेत अन्वेषणात्मक न्याय में भी मिलता है, जो 22 अक्टूबर, 1844 को आरम्भ हुआ था। अन्वेषणात्मक न्याय मृतकों की जाँच और न्याय से शुरू हुआ, और 11 सितंबर, 2001 को जीवितों का अन्वेषणात्मक न्याय आरम्भ हुआ।

जीवितों का न्याय भी दो अवधियों में विभाजित है; पहली अवधि 11 सितंबर, 2001 से आरंभ होती है, उन लोगों के अन्वेषण और न्याय के साथ जो एक लाख चवालीस हजार में शामिल होने के उम्मीदवार हैं, क्योंकि न्याय परमेश्वर के घर से आरंभ होता है। मृतकों का अन्वेषणात्मक न्याय केवल उन्हीं पर किया गया जिनके नाम उनके जीवन के किसी समय जीवन की पुस्तक में दर्ज किए गए थे। मृतकों के वे नाम जो लिखे और दर्ज थे, फिर पापों की पुस्तक से मिलाए गए। यदि उनके ऐसे पाप थे जिन्हें उन्होंने अंगीकार नहीं किया था, तो उनके नाम जीवन की पुस्तक से हटा दिए गए। जहाँ जीवितों का अन्वेषणात्मक न्याय इस रूप में परिभाषित है कि वह परमेश्वर के घर से आरंभ होता है, वहीं मृतकों के अन्वेषणात्मक न्याय में ऐसी कोई विशेष परिभाषा आवश्यक नहीं थी।

जीवितों के जांच-पड़ताल के न्याय में, परमेश्वर के वचन ने स्पष्ट रूप से यह बताया कि एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय वह न्याय यरूशलेम से आरंभ हुआ, जो परमेश्वर की कलीसिया है। बाइबल इस तथ्य की दूसरी प्रत्यक्ष गवाही देती है।

क्योंकि अब वह समय आ पहुंचा है कि न्याय परमेश्वर के घर से आरम्भ हो; और यदि पहले हम से आरम्भ होता है, तो जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते, उनका अंत क्या होगा? 1 पतरस 4:17.

जीवितों का न्याय यरूशलेम, परमेश्वर के घर, से आरंभ होता है, और उस न्याय के आरंभ होने का एक निश्चित समय है। जीवितों का न्याय यरूशलेम में तब आरंभ होता है जब लेखक की दवात यरूशलेम से होकर गुजरती है और उन पुरुषों और स्त्रियों पर चिह्न लगाती है जो कलीसिया और देश में किए जा रहे घृणित कर्मों के कारण आहें भरते और रोते हैं।

सुवार्ता का पालन न करने वाले वर्ग की पहचान प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में एक लाख चवालीस हजार के विपरीत की गई है, जहाँ यूहन्ना उन्हें महान जनसमूह कहता है। यह महान जनसमूह जीवित आत्माओं के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिनका न्याय जीवितों के न्याय की अवधि के दौरान होता है, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की

व्यवस्था का पूरी तरह पालन नहीं किया है, क्योंकि वे पोप के सूर्य-दिन पर उपासना करते रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय, यहजेकल अध्याय नौ में लेखक की दवात लिए हुए स्वर्गदूत द्वारा जिन पर मुहर लगाई गई है—जो प्रकाशितवाक्य अध्याय सात की मुहरबंदी भी है—उन्हें एक पताका के रूप में ऊँचा उठाया जाएगा। तब जो वर्तमान में सुवार्ता का पालन नहीं कर रहे हैं, उन्हें सातवें दिन के सब्त के प्रति जवाबदेह ठहराया जाएगा।

परंतु पूर्व पीढ़ियों के मसीहियों ने रविवार का पालन किया, यह मानकर कि ऐसा करके वे बाइबल के सब्त का पालन कर रहे हैं; और अब हर कलीसिया में, रोमन कैथोलिक संप्रदाय सहित, ऐसे सच्चे मसीही हैं जो ईमानदारी से मानते हैं कि रविवार ईश्वरीय नियुक्ति का सब्त है। परमेश्वर उनके उद्देश्य की सच्चाई और उसके समक्ष उनकी सत्यनिष्ठा को स्वीकार करता है। परन्तु जब रविवार का पालन कानून द्वारा लागू किया जाएगा, और संसार को सच्चे सब्त के दायित्व के विषय में प्रकाश दिया जाएगा, तब जो कोई परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए, रोम के अधिकार से बढ़कर कोई अधिकार न रखने वाले एक आदेश का पालन करेगा, वह इस प्रकार परमेश्वर से ऊपर पोपवाद का सम्मान करेगा। वह रोम को और उस शक्ति को सम्मान दे रहा है जो रोम द्वारा निर्धारित उस व्यवस्था को लागू करवाती है। वह पशु और उसकी प्रतिमा की आराधना कर रहा है। तब जब मनुष्य उस व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं जिसे परमेश्वर ने अपनी अधिकार की निशानी घोषित किया है, और उसके स्थान पर उस चीज़ को आदर देते हैं जिसे रोम ने अपनी सर्वोच्चता के चिन्ह के रूप में चुना है, तो वे इस प्रकार रोम के प्रति निष्ठा के चिन्ह—'पशु का चिन्ह'—को स्वीकार करेंगे। और तभी, जब यह मुद्दा इस प्रकार स्पष्ट रूप से लोगों के सामने रख दिया जाएगा और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं और मनुष्यों की आज्ञाओं के बीच चुनाव करना होगा, तब जो लोग उल्लंघन में बने रहेंगे, वे 'पशु का चिन्ह' प्राप्त करेंगे। द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 449.

जिन पर मुहर लगी है, उनका ध्वज उन लोगों को जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते, आज्ञाकारिता में बुलाता है।

और उस दिन यिश् की जड़ होगी, जो लोगों के लिये ध्वज के समान खड़ी होगी; उसकी ओर अन्यजातियाँ आएँगी, और उसका विश्राम महिमामय होगा। और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाकर अपनी प्रजा के शेष लोगों को, जो अशूर से, और मिस्र से, और पठरोस से, और कूश से, और एलाम से, और शिनार से, और हामात से, और समुद्र के द्वीपों से बचे होंगे, छुड़ाएगा। और वह जातियों के लिये ध्वज खड़ा करेगा, और इस्राएल के निकाले हुएों को इकट्ठा करेगा, और यहूदा के तितर-बितर लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से एकत्र करेगा। यशायाह 11:10-12.

जो लोग वर्तमान में सुसमाचार का पालन नहीं करते, उनका न्याय उनके जीवित रहते ही किया जाता है; पर उनका न्याय जीवित एक लाख चवालीस हज़ार के अन्वेषण न्याय के बाद ही होना चाहिए, क्योंकि शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के संकट के दौरान परमेश्वर की मुहर वाले पुरुषों और महिलाओं को देखकर ही उन्हें चेतावनी दी जा सकती है।

“पवित्र आत्मा का कार्य संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराना है। संसार को केवल तब ही चेतावनी दी जा सकती है जब वह उन लोगों को देखे जो सत्य पर विश्वास करते हैं, सत्य के द्वारा पवित्र किए गए हैं, उच्च और पवित्र सिद्धान्तों के अनुसार आचरण कर रहे हैं, और एक उच्च, महान अर्थ में, उन लोगों के बीच की विभाजक रेखा को प्रकट कर रहे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और उन लोगों के बीच जो उन्हें अपने पैरों तले रौंदते हैं। आत्मा का पवित्रीकरण उन लोगों के बीच के भेद को स्पष्ट रूप से चिह्नित करता है जिन पर परमेश्वर की मुहर है, और उन लोगों के बीच जो एक जाली विश्राम-दिन मानते हैं। जब परीक्षा आएगी, तब यह स्पष्ट रूप से दिखाया जाएगा कि पशु की छाप क्या है। वह रविवार का मानना है। जो लोग सत्य सुन लेने के बाद भी इस दिन को पवित्र मानते रहते हैं, वे उस पाप के मनुष्य की मुहर धारण करते हैं, जिसने समयों और व्यवस्था को बदलने का विचार किया।” Bible Training School, December 1, 1903.

कार्यकारी न्याय, जिसमें तीसरे एलिव्याह का कार्य पूरा होता है, शीघ्र आने वाले रविवार क़ानून से आरम्भ होता है। यह दो अवधियों में विभाजित है; पहली अवधि में, जो अभी सुसमाचार का पालन नहीं करते, उनके लिए परमेश्वर के न्याय दया के साथ मिलकर प्रकट होते हैं, और उसके बाद सात अंतिम विपत्तियाँ आती हैं, जो बिना दया उंडेली जाती हैं।

अनुग्रह का समय अब अधिक देर तक नहीं चलेगा। अब परमेश्वर पृथ्वी पर से अपना रोकने वाला हाथ उठा रहे हैं। बहुत समय से वह अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से स्त्री-पुरुषों से बोलता आया है; पर उन्होंने उस बुलाहट पर ध्यान नहीं दिया। अब वह अपने न्यायों के द्वारा अपने लोगों से और संसार से बोल रहा है। इन न्यायों का समय उन लोगों के लिए दया का समय है जिन्हें अभी तक यह जानने का अवसर नहीं मिला कि सत्य क्या है। प्रभु उन पर करुणा-भरी दृष्टि डालेंगे। उसका दयालु हृदय द्रवित है; उसका हाथ अब भी बचाने के लिए फैला हुआ है। इन अंतिम दिनों में पहली बार सत्य सुनने वाले बहुत से लोग सुरक्षित भेड़शाला में स्वीकार किए जाएंगे। रिव्यू एंड हेराल्ड, 22 नवंबर, 1906.

जो सुसमाचार का पालन नहीं करते, वे 'अन्य भेड़ें' हैं जिन्हें यीशु ने बुलाने का वादा किया था, और जब वह बुलाएगा तो वे उसकी वाणी सुनेंगे.

और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं हैं; उन्हें भी मुझे लाना है, और वे मेरी आवाज़ सुनेंगी; और तब एक ही भेड़शाला और एक ही चरवाहा होगा। यूहन्ना 10:16.

जो "आवाज़" वे सुनते हैं, वह प्रकाशित वाक्य के अठारहवें अध्याय की दूसरी "आवाज़" है, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय ऊँचे स्वर में पुकारती है, जब महान व्यभिचारिणी का न्याय दोगुना किया जाता है, क्योंकि उसने अपने परखकाल के पाप का प्याला भर दिया है।

“भविष्यद्वक्ता कहता है, 'मैं ने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा अधिकार था; और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई। और उसने बड़े शब्द से बलपूर्वक पुकारकर कहा, बड़ा बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया' (Revelation 18:1, 2)। यही वही संदेश है जो दूसरे स्वर्गदूत के द्वारा दिया गया था। बाबुल गिर पड़ा है, 'क्योंकि उसने अपनी व्यभिचार के क्रोध की मदिरा सब जातियों को पिलाई है' (Revelation 14:8)। वह मदिरा क्या है?—उसकी मिथ्या शिक्षाएँ। उसने संसार को चौथी आज्ञा के सब्त के स्थान पर एक झूठा विश्रामदिन दिया है, और उस असत्य को भी फिर दोहराया है जो शैतान ने पहले अदन में हव्वा से कहा था—आत्मा की स्वाभाविक अमरता। ऐसे ही अनेक समजातीय भ्रम उसने दूर-दूर तक फैला दिए हैं, 'और मनुष्यों की आज्ञाओं को उपदेश करके सिखाती है' (Matthew 15:9)।”

“जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की, तब उन्होंने मंदिर को उसके पवित्रता-भंजक अपवित्रीकरण से शुद्ध किया। उनकी सेवकाई के अंतिम कार्यों में मंदिर की दूसरी शुद्धि भी सम्मिलित थी। इसी प्रकार, संसार को चेतावनी देने के अंतिम कार्य में कलीसियाओं के लिए दो पृथक् बुलाहटें दी जाती हैं। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश यह है, 'गिर पड़ा, गिर पड़ा बड़ा बाबुल, क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोधमय दाखमधु को सब जातियों को पिलाया है' (प्रकाशितवाक्य 14:8)। और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के प्रबल पुकार में स्वर्ग से यह वाणी सुनाई देती है, 'हे मेरी प्रजा, उसमें से निकल आओ, ताकि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर न आ पड़े। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है' (प्रकाशितवाक्य 18:4, 5)।” Selected Messages, पुस्तक 2, 118.

संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय आधुनिक बाबुल पर क्रमिक कार्यान्वयनात्मक न्याय आरंभ होता है, और जब ये दोनों न्याय परस्पर आच्छादित होते हैं, तब जीवितों के न्याय की अंतिम अवधि शुरू होती है। वाचा के दूत का मार्ग तैयार करने वाला तीसरा संदेशवाहक उस कार्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो जीवितों के न्याय के समय में होता है, जो 11 सितंबर, 2001 को शुरू हुआ था और तब समाप्त होगा जब वर्तमान में जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते, उनमें से अंतिम लोग प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की दूसरी वाणी सुनेंगे और बाबुल से बाहर निकल आएंगे। वह कार्य मार्ग तैयार करने वाले संदेशवाहक की सेवकाई की शुरुआत में एक लाख चवालीस हजार के मंदिर के शुद्धिकरण और परिशोधन को दर्शाता है, और फिर वाचा के दूत का मार्ग तैयार करने वाले संदेशवाहक की सेवकाई के अंत में विशाल जनसमूह के मंदिर का परिशोधन और शुद्धिकरण।

शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय, पेंटेकोस्ट पर जो परमेश्वर की शक्ति प्रकट हुई थी, वही फिर प्रकट होगी।

जब तक हमारे चरित्र पर एक भी दाग या कलंक रहेगा, हम में से कोई भी परमेश्वर की मुहर कभी प्राप्त नहीं करेगा। हमारे चरित्र की कमियों को दूर करना, आत्मा के मंदिर को हर अपवित्रता से शुद्ध करना, यह हमारे ही ऊपर छोड़ा गया है। तब अन्तिम वर्षा हम पर वैसे ही बरसेगी जैसे पेन्टेकोस्ट के दिन प्रारम्भिक वर्षा चेलों पर बरसी थी। . . .

"तैयारी के महान कार्य में आप क्या कर रहे हैं, भाइयो? जो संसार के साथ मिल रहे हैं, वे सांसारिक ढाँचा ग्रहण कर रहे हैं और पशु के चिह्न के लिए तैयार हो रहे हैं। जो स्वयं पर अविश्वास रखते हैं, जो परमेश्वर के समक्ष स्वयं को दीन करते हैं और सत्य का पालन करके अपनी आत्माओं को शुद्ध करते हैं—वे स्वर्गीय ढाँचा ग्रहण कर रहे हैं और अपने मार्थों पर परमेश्वर की मुहर के लिए तैयार हो रहे हैं। जब आदेश जारी होगा और मुहर लगा दी जाएगी, तब उनका चरित्र अनंतकाल तक शुद्ध और निष्कलंक बना रहेगा।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 214, 216.

यहीं भविष्यसूचक वचन में एक प्रत्यक्ष विरोधाभास पर ठोकर खाई जा सकती है, यद्यपि ऐसा होना आवश्यक नहीं है। शिष्यों के समय पेंटेकोस्ट पर जो संदेश सामर्थ्य से भर दिया गया था, वह अन्यजातियों तक नहीं पहुँचाया गया—अर्थात् वे जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय सुसमाचार की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे। पेंटेकोस्ट पर सामर्थित वह संदेश प्राचीन इस्राएल तक पहुँचाया गया, जो अगले साढ़े तीन वर्षों तक अब भी अपने अंतिम परख के समय में थे।

तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं, ताकि अपराध का अंत किया जाए, और पापों का अंत किया जाए, और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और अनन्त धार्मिकता लाई जाए, और दर्शन और भविष्यद्वाणी पर मुहर लगाई जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। दानियेल 9:24.

पेन्तेकुस्त पर सामर्थ्य प्राप्त वह संदेश उन लोगों तक नहीं पहुँचाया गया जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते थे, जब तक कि सन 34 में स्तेफनुस को पत्थरों से मार डाला गया। बहन वाइट अक्सर इस तथ्य का उल्लेख करती हैं।

तब स्वर्गदूत ने कहा, 'वह बहुतों के साथ एक सप्ताह [सात वर्ष] के लिए वाचा की पुष्टि करेगा।' उद्धारकर्ता के अपनी सेवकाई आरम्भ करने के बाद सात वर्षों तक सुसमाचार विशेष रूप से यहूदियों को सुनाया जाना था; पहले साढ़े तीन वर्ष स्वयं मसीह ने, और उसके बाद प्रेरितों ने। 'सप्ताह के बीच में वह बलिदान और अर्पण को समाप्त कर देगा।' दानियेल 9:27। ईस्वी सन् 31 के वसंत में, मसीह, जो सच्चा बलिदान है, कलवरी पर बलि चढ़ाया गया। तब मन्दिर का परदा बीच से फटकर दो भाग हो गया, यह दर्शाते हुए कि बलिदानी सेवा की पवित्रता और महत्व समाप्त हो चुके थे। पृथ्वी पर होने वाले बलिदान और अर्पण के समाप्त होने का समय आ गया था।

वह एक सप्ताह—सात वर्ष—ई. स. 34 में समाप्त हुआ। तब स्तिफनुस को पत्थर मारकर यहूदियों ने सुसमाचार के प्रति अपनी अस्वीकृति पर अंतिम मुहर लगा दी; उत्पीड़न के कारण जो चले दूर-दूर तितर-बितर कर दिए गए थे, वे 'जहाँ-जहाँ गए, वचन का प्रचार करते गए' (प्रेरितों के काम 8:4); और थोड़े ही समय बाद, सताने वाला शाऊल परिवर्तित हुआ, और अन्यजातियों का प्रेरित पौलुस बन गया। *The Desire of Ages*, 233.

वह संदेश, जिसे पिन्तेकुस्त के दिन—मसीह के पुनरुत्थान के पचास दिन बाद—सशक्त किया गया, रविवार के कानून के साथ मेल खाता है, जहाँ सुसमाचार मसीह की अन्य भेड़ों को बाबुल से बाहर बुलाता है; फिर भी कूस के बाद साढ़े तीन वर्ष तक यहूदियों ने 'सुसमाचार के अस्वीकार पर मुहर' नहीं लगाई थी, और तब वह संदेश अन्यजातियों के पास गया, जो उस समय सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते थे। यह प्रतीत होने वाला विरोधाभास इस कथन से और बढ़ जाता है कि 34 ईस्वी में यहूदियों ने सुसमाचार के अस्वीकार पर मुहर लगा दी, क्योंकि सिस्टर वाइट इसके विपरीत कहती हैं।

चूँकि समस्त अनुष्ठानिक व्यवस्था मसीह का प्रतीक थी, इसलिए उनसे अलग उसका कोई मूल्य नहीं था। जब यहूदियों ने मसीह को मृत्यु के लिए सौंपकर उनके अस्वीकार पर मुहर लगा दी, तब उन्होंने उस सबको अस्वीकार कर दिया जिसने मंदिर और उसकी सेवाओं को अर्थ दिया था। उसकी पवित्रता जा चुकी थी। उसका विनाश

निश्चित था। उस दिन से बलिदानों और उनसे संबंधित सेवा का कोई अर्थ न रहा। कैन की भेंट के समान, उनमें उद्धारकर्ता पर विश्वास की अभिव्यक्ति नहीं थी। मसीह को मृत्यु के घाट उतारकर, यहूदियों ने वस्तुतः अपने मंदिर को नष्ट कर दिया। जब मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, तो मंदिर का आंतरिक परदा ऊपर से नीचे तक दो भागों में फट गया, यह दर्शाते हुए कि महान अंतिम बलिदान हो चुका है, और कि बलिदानों की प्रणाली सदा के लिए समाप्त हो गई। युगों की अभिलाषा, 165.

क्या यहूदियों ने सुसमाचार के प्रति अपनी अस्वीकृति पर मुहर स्तेफनुस को पत्थरों से मार डाले जाने के समय लगाई थी, या मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय? यह प्रतीत होने वाला विरोधाभास उस प्रतीत होने वाले विरोधाभास से संबंधित है, जिसमें पेंटेकोस्ट पर परमेश्वर की सामर्थ के प्रगटीकरण को शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से जोड़कर पहचाना जाता है।

हम अगले लेख में इस प्रतीत होने वाले विरोधाभास को सुलझाने का इरादा रखते हैं, पर मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि इस विशेष विचार-विमर्श का उद्देश्य उस तथ्य पर आधारित है, जिसे भविष्यद्वक्ताओं ने पहचाना है: कि अंतिम दिनों में परमेश्वर की लाओदीकियन प्रजा न्याय को नहीं समझती। हमने न्याय के विभिन्न कालों और उद्देश्यों की समीक्षा करने के लिए समय लिया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि जाँच-परक और कार्यान्वयनात्मक न्याय दोनों किस प्रकार शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर आकर मिलते हैं। अभी जो प्रतीत होने वाले विरोधाभास हमने उठाए हैं, उनसे संबंधित प्रकटीकरण को देखने के लिए इन तत्वों की समीक्षा आवश्यक थी।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

रोमन कैथोलिक यह स्वीकार करते हैं कि सब्त में परिवर्तन उनकी कलीसिया द्वारा किया गया था, और वे इसी परिवर्तन को कलीसिया के सर्वोच्च अधिकार का प्रमाण बताते हैं। वे घोषित करते हैं कि सप्ताह के पहले दिन को सब्त मानकर मनाने के द्वारा, प्रोटेस्टेंट यह स्वीकार कर रहे हैं कि उसे दैवीय विषयों में विधान करने की शक्ति है। रोमन कलीसिया ने अपनी अभ्रम्यता के दावे का परित्याग नहीं किया है; और जब संसार तथा प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ उसके द्वारा गढ़े गए एक नकली सब्त को स्वीकार करती हैं, जबकि वे यहोवा के सब्त को अस्वीकार करते हैं, तो वे व्यवहारतः इस दावे को स्वीकार कर लेते हैं। वे इस परिवर्तन के लिए प्राधिकार का हवाला दे सकते हैं, परंतु उनके तर्क की भ्रांति आसानी से समझी जा सकती है। पोपवादी इतना चतुर है कि वह देख लेता है कि प्रोटेस्टेंट स्वयं को धोखा दे रहे हैं, और इस मामले के तथ्यों पर स्वेच्छा से आँखें मूँद रहे हैं। जैसे-जैसे रविवार की प्रथा को बढ़ती हुई स्वीकृति मिलती है, वह हर्षित होता है, यह आश्चर्य होकर कि अंततः यह पूरे प्रोटेस्टेंट जगत को रोम के ध्वज के नीचे ले आएगी।

सब्त में किया गया परिवर्तन रोमन कलीसिया के अधिकार का चिन्ह या निशान है। जो लोग, चौथी आज़ा की मांगों को समझकर, सच्चे के स्थान पर झूठे सब्त का पालन करना चुनते हैं, वे इस प्रकार उसी सत्ता को सम्मान अर्पित कर रहे हैं, जिसके द्वारा ही यह आज़ा दी गई है। पशु का चिन्ह पापाई सब्त है, जिसे परमेश्वर द्वारा नियुक्त दिन के स्थान पर संसार ने स्वीकार कर लिया है।

परन्तु भविष्यवाणी में निर्दिष्ट पशु का चिन्ह लेने का समय अभी नहीं आया है। परीक्षा का समय अभी नहीं आया है। हर कलीसिया में सच्चे मसीही हैं; रोमन कैथोलिक समुदाय भी इसका अपवाद नहीं है। जब तक लोगों को प्रकाश नहीं मिला और उन्होंने चौथी आज़ा का दायित्व नहीं देखा, तब तक किसी को दोषी नहीं ठहराया जाता। परन्तु जब झूठे सब्त को लागू करने का फरमान जारी होगा, और जब तीसरे स्वर्गदूत की जोरदार पुकार मनुष्यों को पशु और उसकी प्रतिमा की उपासना के विरुद्ध चेतावनी देगी, तब झूठ और सत्य के बीच की रेखा स्पष्ट रूप से खिंच जाएगी। तब जो लोग अभी भी उल्लंघन करते रहेंगे, वे अपने माथे पर या अपने हाथ पर पशु का चिन्ह प्राप्त करेंगे।

तेजी से हम इस काल के निकट पहुँच रहे हैं। जब प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ एक झूठे धर्म का समर्थन करने के लिए धर्मनिरपेक्ष सत्ता से मिल जाएँगी—जिसका विरोध करने के कारण उनके पूर्वजों ने सबसे भीषण उत्पीड़न सहा

था—तब चर्च और राज्य के संयुक्त अधिकार से पोप का सब्त लागू कराया जाएगा। एक राष्ट्रीय धर्मत्याग होगा, जिसका अंत केवल राष्ट्रीय विनाश में होगा। बाइबल ट्रेनिंग स्कूल, 2 फरवरी, 1913।